

आजाद सिपाही

कलम कलम बढ़ाये जा



झारखण्ड की विरासत हमर कोयलांचल सुदृढ़ कोयलांचल



गणतंत्र दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

निवेदक

कोयलांचल परिवार

नहीं मिल रहा मुद्दा : खुद की राजनीतिक जमीन तो धंस गयी, अब करने लगे धर्म ग्रंथों की बुराई

रामचरित मानस पर विवाद के पीछे है विभाजक राजनीति

■ हिंदू तो सहिष्णु है, कुछ भी बोल दो, क्या फर्क पड़ता है वाली मंथा गलत ■ नये-नये शिव भक्त, हनुमान भक्त बने नेता चुप्पी साधे हुए हैं ■ आखिर साबित क्या करना चाहते हैं इसकी आलोचना करनेवाले

2024 का लोकसभा चुनाव नजदीक है। इस हिसाब से विषय की मंथा भी धीरे-धीरे स्पष्ट हो रही है। विषय, विपक्षी एकता चाहता है, जो अभी हो नहीं पा रही है। विषय मोर्चा बनाना चाहता, जो बन नहीं पा रहा। संभावनाएं टटोली जा रही हैं, लेकिन सभी की महत्वाकांश बीच में आ रही है। विषय पीछे मार्दी को 2024 में हटाना चाहता है, जिसके आसार कम ही नजर आ रहे हैं, क्योंकि उसके पास कोई कार्ययोजना नहीं है। विषय मुद्दों की तात्परा में है, जो उसे मिल नहीं पा सकते। यह सब थोरे हो गये हैं। 2019 में सब फॉलो हो गये। विषय अब नया दाव लेकर आया है। वह है 450 साल पहले लिखी गयी रामचरित मानस की चंद चौपाई। इसकी चौपाई को लेकर चंद नेता आग उत्तर से रहे हैं। अपनी धूमल होती राजनीति के लिए उन्होंने हिंदुओं के प्रति ग्रंथ रामचरित मानस पर हमला करना शुरू कर दिया। करण स्पष्ट है, उन्हें

हिंदुओं में फूट डालने वाली राजनीति ही करने चाहती है। फूट डालो राज करो। हिंदू तो सहिष्णु है। वह सब कुछ सह लेगा, यह उन नेताओं को पाना है। उनकी हिम्मत थीं कि दूसरे धर्म की किसी मानद पुस्तक पर टिप्पणी करने की। हद तो तब होती है, जब विषय के कुछ बड़े चैरिस, जिन्होंने अपना-अपना भगवान चुन लिया है, वे भी इस मुद्दे पर चुप्पी साधे हुए हैं। नये-नये तपस्वी बने और खुद को शिव भक्त कहने वाले, खुद को हनुमान भक्त कहने वाले, कृष्ण भक्त कहने वालों की जबान पर माने दीं जम गयी हैं। मुंह से कुछ निकल नहीं रहा है। दुनिया भर में सम्मानित और सबसे अधिक भाषाओं में अनूदित महान महाकव्य रूपी धर्मग्रंथ, श्रीरामचरित मानस पर हमला करना शुरू कर दिया। करण स्पष्ट है, उन्हें



हिंदुओं के सबसे पवित्र ग्रंथ रामचरित मानस के खिलाफ बयान देकर माहौल को गरम कर दिया है। इन नेताओं के अनुसार साढ़े चार सौ साल पहले गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित इस धर्मग्रंथ में दलितों का अपमान किया गया है।

ऐसा माना जाता है कि गोस्वामी तुलसीदास ने अयोध्या में रहते हुए ही रामचरित मानस की रचना मुगल बादशाह अकबर के शासन काल के दौरान की थी। उनकी रचना मुख्यतः अवधी भाषा में है, लेकिन उसमें संस्कृत, उर्दू, फारसी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। माना तो वह भी जाना है कि तुलसीदास जी ने इसमें श्री राम के चरित्र की साधारण मुख्य से तुलना करते हुए विवेकानंद की है। इसलिए इसे रामचरित मानस कहते हैं।

यह सभी जानते हैं कि रामचरित मानस की रचना गोस्वामी तुलसीदास ने अयोध्या में रहते हुए ही रामचरित मानस की रचना मुगल बादशाह अकबर के शासन काल के दौरान की थी। उनकी रचना मुख्यतः अवधी भाषा में है, लेकिन उसके संस्कृत, उर्दू, फारसी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। माना तो वह भी जाना है कि तुलसीदास जी ने इसमें श्री राम के चरित्र की साधारण मुख्य से तुलना करते हुए विवेकानंद की है। इसलिए इन दिनों धार्मिक मुद्दों, वह भी बहुसंख्यक हिंदू धर्म से जुड़े मुद्दों को खबर उड़ाता जा रहा है। यहीं यह कहा जाता है कि राजनीतिक दल और उनके नेता माहौल बनाने में लग गये हैं, तो ज्यादा सटीक होगा। नन्-रोटी की जद्दी वहाँ में जुड़ा रहे हैं। ये लोगों को दिखाने के लिए इन राजनीतिकों के पास अब शाबद कोई हाथरानी नहीं बचा है, इसलिए अब ये उस हाथरानी का इतनोंमाल करने लगे हैं, जिसकी मारक क्षमता बहुत अधिक होती है। इसलिए इन दिनों धार्मिक मुद्दों, वह भी बहुसंख्यक हिंदू धर्म से जुड़े मुद्दों को खबर उड़ाता जा रहा है। यहीं यह कहा जाता है कि विहार के शिक्षा मंत्री और राजद नेता चंदशेखर और यूपी के पूर्व मंत्री और सपा विधायी विधायिकों के लिए हो रहा है।

विषय का सबसे बड़ा राज्य है, जहाँ दलितों की आवादी सबसे ज्यादा है। लोकसभा चुनाव होने में अपनी सवा साल का वक्त बचा है,

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि दलितों को गजनीत करने वाले नेताओं को अब तक यह खाल सौ साल पहले की थी, लेकिन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

क्या है पूरा विवाद

यूपी देश का सबसे बड़ा राज्य है, जहाँ दलितों की आवादी सबसे ज्यादा है। लोकसभा चुनाव होने में अपनी सवा साल का वक्त बचा है,

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि विषय को घेरने के लिए विषय को किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन बयानों में नहीं आया कि रामचरित मानस में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है। रामचरित मानस को अंधविश्वास के लिए विषय को किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि विषय को घेरने के लिए विषय को किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

रामचरित मानस को अंधविश्वास के लिए विषय को किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इन चौपाईयों को हटाने के लिए किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इन चौपाईयों को हटाने के लिए किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इन चौपाईयों को हटाने के लिए किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इन चौपाईयों को हटाने के लिए किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इन चौपाईयों को हटाने के लिए किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इन चौपाईयों को हटाने के लिए किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इन चौपाईयों को हटाने के लिए किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इन चौपाईयों को हटाने के लिए किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

लेकिन बड़ा सवाल यह है कि इन चौपाईयों को हटाने के लिए किसी भी चाहिए ही, जो उसे रामचरित मानस की उन चौपाईयों में मिल गया। समाजवादी पार्टी के बड़े नेता वालों में लिखी इन चौपाईयों का विवाद बहले आज तक कभी नहीं हुआ, तो फिर अधिकर अभी ही क्यों हो रहा है।

